

कला और शिल्प सीखने से बच्चों में **रचनात्मकता और कल्पनाशक्ति** का विकास होता है। यह **अनुभूति एवं सौंदर्यबोध** को प्रोत्साहित करता है तथा **आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान कौशल** को विकसित करने में सहायक होता है। विद्यार्थियों को अपने ज्ञान, विचारों और भावनाओं को ऐसे रचनात्मक तरीकों से व्यक्त करने के अवसर प्रदान किए जाते हैं, जिनमें शब्दों का प्रयोग आवश्यक नहीं होता।

सभी कक्षाओं के लिए कला शिक्षा में **सरल चित्रांकन तथा मुक्तहस्त चित्रांकन** की बुनियादी तकनीकों को शामिल किया गया है। प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों को सरल एवं मनोरंजक चित्र बनाने, रेखाओं और आकृतियों को समझने तथा रंगों का उचित प्रयोग करने के अवसर दिए जाते हैं।

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए चित्रांकन के साथ-साथ **रंग भरने की विभिन्न तकनीकों एवं शैलियों** का अभ्यास कराया जाता है। इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों की रचनात्मकता, सूक्ष्म अवलोकन क्षमता तथा रंगों की समझ में सुधार होता है।

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को **रंग भरने की उन्नत तकनीकों, जीवन-अध्ययन (Life Study) तथा प्रकाश और छाया के प्रभावों** का अभ्यास कराया जाता है। इन गतिविधियों से विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति, अवलोकन क्षमता, अनुपात की समझ तथा कलात्मक अभिव्यक्ति को विकसित करने में सहायता मिलती है।

इसके अतिरिक्त, विभिन्न **शिल्प गतिविधियों**, जैसे **ओरिगेमी, पेपर क्राफ्ट, मेटल एम्बॉसिंग** आदि को भी कला शिक्षा का हिस्सा बनाया गया है। इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में हाथों से कार्य करने की क्षमता, एकाग्रता, धैर्य, सूक्ष्म कौशल तथा रचनात्मक सोच का विकास होता है।

कला एवं शिल्प गतिविधियाँ विद्यार्थियों को अपनी **कल्पनाओं, विचारों और भावनाओं को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करने** का अवसर प्रदान करती हैं। इन गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, सौंदर्यबोध, रचनात्मकता तथा कार्य के प्रति रुचि विकसित होती है।

इस प्रकार, कला एवं शिल्प शिक्षा विद्यार्थियों के **सर्वांगीण विकास** में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा उन्हें आनंदमय, अनुभवात्मक और गतिविधि-आधारित अधिगम के अवसर प्रदान करती है।

